ऐतिहासिक संदर्भों में भारत–जापान
के
सांस्कृतिक मूल्यों का अवलोकन
(सन् 1950 से वर्तमान तक)

इतिहास में पी.एच.डी. उपाधि हेतु
शोध प्रस्तावना

शोध निर्देशिका
JVN डॉ. गीता सिंह

शोधार्थी :
JVN अमित चमोली
नामांकन संख्या. **JVR-II/17/10081**

मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग
प्रबंधन एवं मानविकी संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान

जनवरी 2018

ऐतिहासिक संदर्भों में भारत–जापान के सांस्कृतिक मूल्यों का अवलोकन (सन् 1950 से वर्तमान तक)

(1) पृष्ठभूमिः

भारत–जापान का अभ्युदय द्वितीय विश्व युद्ध के परिणामों के परिणती माना जा सकता है। दोनों देशों का प्रारम्भिक सफर अनेक कठिनाईयों से युक्त रहा। परन्तु धीरे धीरे जापान अपने स्वर्णिम इतिहास को दोहराने में कामयाब रहा है जबकि भारत को अभी कितना इंतजार करना पडेगा, यह यक्ष प्रश्न बना हुआ है। इन्ही संदर्भों में शोधार्थी का शोध आधारित रहेगा, जिसमें भारत जापान के सांस्कृतिक तत्वों को केन्द्र बिन्दु में रखा जायेगा।

भारत तथा जापान के न केवल भौतिक तत्वों में समानता है बल्कि सांस्कृतिक तत्व ज्यादा प्रखरता लिये हुये हैं। शारीरिक बल भारतीय के पक्ष में होने के बावजूद बौद्धिक बल के आधार पर जापान ने अपना लोहा दुनिया में मनाया है।

खान–पान में भारतीय तथा जापानी में अनेक समानतायें हैं जहॉ जापान समुद्री उत्पादों पर ज्यादा निर्भर है वहीं भारत के दक्षिण भाग के लोगों का प्रिय खाद्य पदार्थ समुद्री उत्पाद ही है परन्तु जो इन दोनों समानताओं को पृथक करती है वह मसालों का उपयोग है। भारत प्राचीन काल से मसाला उत्पादक में समृद्ध रहा है जबकि जापान के पर्यावरणीय स्वरूप में इसका अभाव प्रतीत होता है।

जापान की आधुनिकता के दौर में भेष–भूषा में व्यापक परिवर्तन आया है वही भारत भी इससे अछूता नहीं है, परन्तु ऐतिहासिक संदर्भों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि भारत तथा जापान के वस्त्र आभूषणों में अनेक समानतायें हैं, जो इनके एक ही मूल को प्रमाणित करता है। प्राचीन स्थापत्य में भारत तथा जापान बहुत हद तक एक दूसरें से समानता प्रदर्शित करते हैं।

प्राचीन काल से भारत तथा जापान राजशाही के द्योतक रहें हैं, परन्तु द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लोकतंत्र की क्रान्ति से भारत और जापान दोनों ही प्रभावित हुये। अंग्रेजो की गुलामी के बाद स्वतंत्र हुये भारत ने लोकतंत्र की नीव संविधान के पहुलओं पर रखी। वहीं जापान में लोकतंत्र राजशाही के अधीन फल–फूलता रहा। दोनों देशों के

राजनीति की वास्तविक शक्तियॉ प्रधानमंत्री में सनिहित है। दोनों देशों की संसदीय व्यवस्था के सांकेतिक जापान के ऐतिहासिक संदर्भों में सांस्कृतिक समानता को प्रदर्शित करती है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद भारत में जहॉ अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि को बनाया वहीं उपजाउ भूमि के अभाव में जापान ने उद्योगों को बढावा देने वाली नीति का अनुसरण किया, यही कारण है जहॉ भारत में अर्थ का महत्वपूर्ण आधार कृषि को माना जाता है और बहुसंख्य लोग इससे संबद्ध भी हैं वहीं जापान की अधिसंख्यक जनसंख्या का कार्य क्षेत्र उधोग ही है परन्तु भारत भी धीरे–धीरे औद्योगिक शक्ति बनने की ओर अग्रसर है। वहीं जापान तकनीकी पर आधारित कृषि को बढावा देकर इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल कर रहा है। दोनों देशों की यह विशेषता यहॉ की संस्कृतियों को प्रभावित करने तथा दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक पक्षों का जानने का महत्वपूर्ण अव्ययव है।

भारत–जापान के संबंध आज के युग में भी अतुल्यनीय हैं। यह संबंध सदियों पुराना है। दोनों सभ्यताओं ने एक दूसरे को प्रभावित किया और एक दूसरे पर अपनी छाप छोड़ी। वेद और बौद्ध के प्रसिद्ध जापानी शिक्षक हाजीमें (HAZIME) नाकामुरा के अनुसार ‘‘जापानी संस्कृति पर भारत का बहुत प्रभाव रहा है।

उनके अनुसार भारतीय प्रभाव के बिना जापानी संस्कृति ऐसी नहीं होती जैसी की वह आज है। टोयोटा के महाप्रबंधक श्री नाओमी ईशी ने कहा था कि सदियों से जापान ने भारत से बहुत लाभ उठाया है जितना कि भारत ने वर्तमान में जापान से। भारत–जापान के संबंध आज के युग में एकला मार्ग पर है जहॉ अवरोधक न के बराबर है। फिर चाहे वह सांस्कृतिक, राजनैतिक या फिर भोगौलिक हो। 6वीं शताब्दी में जब भारत में बौद्ध धर्म का प्रचार–प्रसार अपने चरम में था तब बौद्ध अनुयायियों द्वारा अपने धम्म के प्रचार प्रसार के लिए विदेशों में भ्रमण किया गया। इस क्रम में ये चीन होते हुए जापान पहॅुचे जहॉ बौद्ध धर्म के प्रचार–प्रसार के साथ–साथ इन्होनें भारतीय संस्कृति से भी परिचय कराया, यही कारण है कि जापान और भारत में निकटता आयी व एक–दूसरे को जानने का प्रयास किया गया।

मध्यकाल में लगभग 760 (सामान्य संवत) में बोधि धर्मा ने बुद्ध की शिक्षा और ध्यान के साथ दक्षिण भारत के कांचीपुरम से जापान की ओर यात्रा की। जापान के श्री बोधि को दारूमा कहा गया। यह ध्यान पहले चीन फिर जापान में जैन के नाम से जाना गया।जापान में इसका प्रचार–प्रसार आचार्य हुई नेंग के द्वारा किया गया।

बौधि धर्मा द्वारा ही मार्शल आर्ट को परिचित कराया गया। धर्मा जब प्रचार–प्रसार के लिए विदेशों में भ्रमण पर थे तब उन पर हमले भी हुये थे, जिस कारण उन्होनें अपनी रक्षा हेतु इस कला को अपने अनुयायियों को सिखाया, जिससे वह अपनी रक्षा स्वयं करना सीखे। बोधि धर्मा जहॉ–जहॉ गये वहॉ–वहॉ बौद्ध धर्म और ध्यान के साथ–साथ उन्होने मठवासियों को आत्मरक्षा की कला भी प्रदान की। बौद्ध धर्म ध्यान और आत्मरक्षा का संयोजन बौद्ध मुनियों के लिए प्रथ्यायपथ्य नियम बन गया।

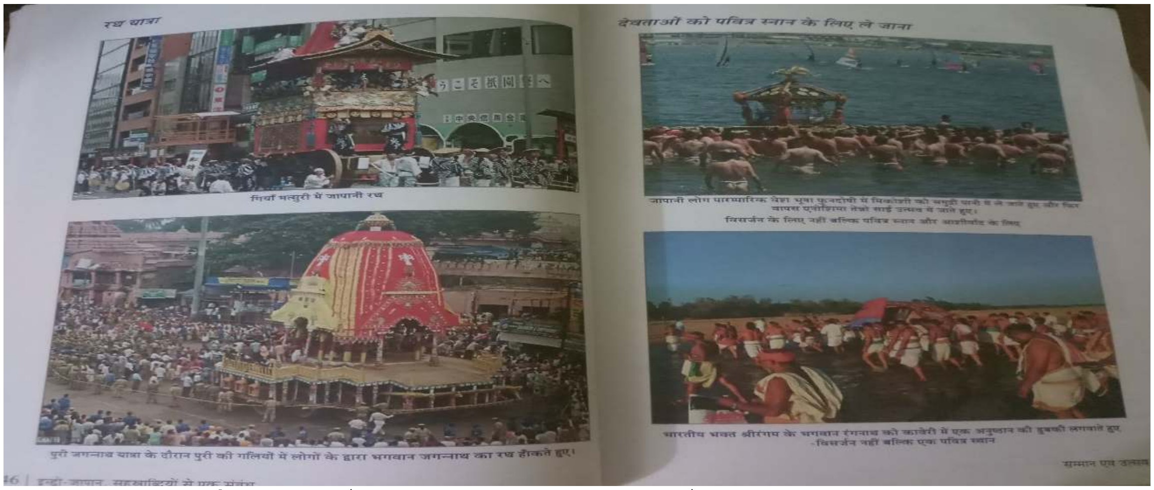

गियाँ मत्सूरी में जापानी रथ एवं भारत में पुरी जगन्नाथ यात्रा

आज के युग में इस कला को जापान में कराटे व दक्षिण भारत में कलारीपट्टम के नाम से जाना जाता है। सिर्फ आत्मरक्षा ही नहीं भारत के पूज्यनीय मन्दिर, देवी देवता आदि जापान में पूजे जाते हैं, जहॉ इन्हें अन्य नामों से जाना जाता है, विद्या की देवी सरस्वती को जापान में बेनजैलेम श्री गणेश को कोगिलेन का जाता है। देवी लक्ष्मी को किस्शोलेन के नाम से जाना जाता है। जापान का एक प्रसिद्ध उत्सव गिओन मतसूरी है जिसमें क्योटो में कई रथ एक बड़ी यात्रा में निकलते हैं। यह उत्सव गौ सिरस देवता गौजुतेन्नों या सुसान नो मिकोतो के यसाका जिंजा मन्दिर से निकलता है। इस देवता की प्रार्थना का मूल भारत के श्रावस्ती के साहेत–माहेत नामक प्राचीन जुड़वा शहरों में से एक हैं। साहेत के रक्षक बौद्ध देवता गोसिरसा देवराज तक पहुॅचती है।

बोधी वृक्ष विहार

युद्धोत्तर काल के समय भारती की आजादी के लिये जापान ने अपना योगदान दिया, जिससे सुभाष चन्द्र बोस द्वारा आजादी की लड़ाई को बढाने में इस ओर सकारत्मक बल मिला। 1949 में तत्कालीन प्रधानमंत्री जी द्वारा उपहार स्वरूप एक लिटिल एलीफेंट जापान के उनो जू में प्रदान किया गया जोकि टोक्यिो में स्थित है। यह भेट एक प्रकाश स्वरूप थी जोकि उन लोगों व बच्चों के लिए समर्पित थी जो द्वितीय विश्व युद्ध के कारण भयभीत थे इसका नाम उन्होने इन्दिरा रखा था।

आज के भारत जापान सम्बधों में जो दृढता प्रदान हुई है वह आज के आधुनिक युग में नही बल्कि प्राचीन युग से मानी जाती है। जिस प्रकार बूंद–बूंद से सागर बना है उसी प्रकार इन रिश्तों को दृढता प्रदान करने के लिए बौद्ध धर्म, सांस्कृतिक, राजनैतिक धैर्य व विश्वास ने अहम योगदान प्रदान किया है जो किसी सागर को भरने के लिए बूंदों के समान है। आज भारत जापान राजनैतिक, सांस्कृतिक व सैनिक क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका में है। अपनी संस्कृति को बढावा देने के लिए दोनों देशों द्वारा सांस्कृतिक क्षेत्र के आदान प्रदान का मंच स्थापित किया गया, जहॉ जापानी व भारतीय एक दूसरे की संस्कृति को जान सके **''वह जापान को भारत और भारत को जापान की दृष्टि से देख सके।''**

भारत में जापान द्वारा स्थापित बौद्ध मन्दिर

(2) विषय एवं अध्ययन क्षेत्रः

प्रायः इतिहासकारों न भारत–जापान को लेकर अध्ययन किया है परन्तु यह कार्य दक्षिण भारत व तमिल भाषा को लेकर ही सीमित है। इसी कारण मेरा झुकाव इस विशेष क्षेत्र की ओर हुआ तथा मेरे मन में भारत जापान की ऐतिहासिक व सांस्कृतिक छवि उभरकर आयी जिसमें मुझे भारत द्वारा जापान को बौद्ध धर्म से परिचय करवाना है।

(3) अध्ययन का उददेश्यः

1. भारत जापान के सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन करना शोधार्थी का मुख्य उददेश्य है।
2. वर्तमान में भारत जापान के संबंधों में बन रही दृढता के ऐतिहासिक मूल्यों को समझने का प्रयास करना व वर्तमान में बनती दृढता भविष्य में कितना सशक्त बनेगी इसका अध्ययन करना एवं तुनात्मक अध्ययन करना।
3. भारत जापान के वर्तमान संबंधों को सांस्कृतिक आधार और मजबूती प्रदान किये जाने हेतु ऐतिहासिक परिपेक्ष में सुझाव प्रस्तुत करना।
4. भारत जापान के सांस्कृतिक तथ्यों को सरलतम भाव में प्रस्तुत करना एवं सांस्कृतिक मूल्यों का अध्ययन करना।

5. भारत में समाप्त हो चुकी बौद्ध धर्म का जापान में उत्कर्ष हुआ तथा धर्म के आधार पर कैसे भारत जापान के संबंधों में दृढता आ सके, इसका अध्ययन करना।
6. जापान की प्रमुख युद्ध कला कराटे का भारत से किस प्रकार इतिहास रहा है और इसके माध्यम से कैसे भारत जापान के संबंधों का विकास हो सकेगा, इसका अध्ययन करना।
7. इस शोध का उदेश्य भारत जापान के संदर्भों के इतिहास को मजबूती प्रदान करने हेतु किये जा रहे प्रयासों का अध्ययन करना है।

(4) संबंधित साहित्य का अध्ययनः

1. डी0के0हरि एवं डी0के0हेमा हरि ने अपनी पुस्तक इण्डो जापान ''सहस्त्राब्दियों से एक सम्बध'' में उन्होनें भारत का ज्ञान इसकी प्रथायें इसकी संस्कृति इसके विश्व से संबंध संक्षेप में भारतीय दृष्टिकोण इसके लोकाचार का संचलन किया है। साथ ही साथ उन्होंनें भारत जापान से संबंधित उनके प्राचीनतम संबंधों को उजागर करने का प्रयास किया है। उन्होनें भारत जापान की सांस्कृतिक, आर्थिक सुरक्षा आदि के विषय में अवगत कराया है। भारत में किस प्रकार मार्सल आर्ट की शुरूवात हुई तथा जापान में किस तरह इस कला का विकास हुआ इसके बारे में बताया गया है। भारत जापान के प्राचीन सम्बन्धों को लेखक द्वारा बड़े ही सटीक शब्दों में बताने का प्रयास किया गया है।
2. डी0डी0 कोसांबी ने अपनी पुस्तक ''भारत में बौद्ध धर्म की क्षय'' में भारत में विभाजित बौद्ध धर्म के विषय में अवगत कराने का प्रयास किया गया है, जिसमें उनके द्वारा बौद्ध धर्म के विभाजन हीनयान तथा महायान होना बताया गया है। लेखक द्वारा बौद्ध धर्म में छठी शताब्दी के बाद आए बौद्ध धर्म में परिवर्तनों को भी बताने का प्रयास किया गया है।
3. एम0जी0प्रसाद ने अपनी पुस्तक ''द हिस्टोरी ऑफ थर्ड सेन्चुरी इण्डियन मॉक (बौद्धि धर्मा)'' में बौद्धिधर्मण जिन्हें चीन में दामू के नाम से व भारत में बौद्धि के नाम से जाना जाता है, के विषय में अवगत कराया है कि उनका भारत व चीन, जापान से सम्बन्ध रहा, इसके बारे में उनके द्वारा बौद्ध धर्म को माध्यम मानते हुए परिचय कराया गया है, किस प्रकार उनके द्वारा भारत से चीन तथा जापान यात्रा की गयी व उन्होनें बौद्ध धर्म के प्रचाार प्रसार के लिए किस प्रकार कार्य किये यह बताने का प्रयास किया गया है।
4. मासातोसी नाकायामा ने अपनी पुस्तक ''डायनामिक कराटे'' में कराटे के बारे में बताने का प्रयास किया है। इसमें उन्होनें सूखीवाजा (पंचिंग), उच्चीवाजा (स्ट्राईकिंग) केरी (पॉव का इस्तेमाल) एवं उकेवाजा (ब्लॉकिंग) बताने का प्रयास किया है, जिससे अभ्यर्थी को यह ज्ञात हो सके कि लड़ाई के वक्त किस तरह की तकनीकी इस्तेमाल की जा सकती है। इस पुस्तक में ताकत तथा तेजी व ताकत का सही इस्तेमाल किस तरह से किया जा सकता है यह बताया गया है। जापान की कला को बड़े ही सुन्दर तरीके से दर्शाया व वर्णन किया गया है।

5. रॉविन एल रेली ''चार्ल्स ई टरटल कम्पनी'' ने अपनी पुस्तक ''समुराई लैगेसी एवं मार्डन प्रैक्टिस'' में बौद्धिधर्मण से जुड़ी हुई जानकारी के बारे में अवगत कराया गया है कि इन्होनें भारत व चीन की सीमाओं में तत्कालीन वज्रमुस्टि के बारे में बताने का प्रयास किया है। साथ ही साथ उन्होनें चीन के राजा वूइन नानजिंग के बारे में बताया है जिन्होनें बौद्धिधर्मण को उस समय अपने राजदरवार में आमंत्रित किया था। इन्होनें इस पुस्तक में चीन के प्रसिद्ध शाउलिन टैम्पल का वर्णन किया है।

(5) शोध प्रश्नः

1. भारत जापान के सांस्कृतिक तत्वों को प्रभावित करने वाले कारण कौन कौन से हैं ?
2. क्या कराटे भारत जापान के सांस्कृतिक संबंधों को उजागर करने में सहायक हैं ?
3. लुक ईस्ट से एक्ट ईस्ट पॉलिसी में जापान की क्या भूमिका है?
4. भारत और जापान एक साथ विकास के पथ पर चलना शुरू किये, क्या कारण है कि जापान आज विकसित है और भारत विकासशील?
5. भारत और जापान के लोकतंत्र में क्या मूलभूत अंतर है?
6. बौद्ध धर्म क्या भारत जापान संबंधों का सेतु है?

(6) शोध परिकल्पनाः

वर्तमान में भारत जापान के संबंधों में अभूतपूर्व परिवर्तन आया जिसके कारण दोनों संस्कृतियों के बीच दृढता के साथ आदान प्रदान भी बढा है। इसी संदर्भ को सही तरीके से समझने हेतु शोधार्थी द्वारा ऐतिहासिक परिपेक्ष में सूक्ष्म अवलोकन के बाद संस्कृति के मूलभूत तत्वों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है। इस हेतु शोधार्थी की परिकल्पना भारत जापान के सांस्कृतिक मूल्यों को शोध के द्वारा ऐतिहासिक दृढता के साथ प्रस्तुत करने हेतु शोध परिकल्पना सृजित की गयी है। इस हेतु शोधार्थी द्वारा भारत जापान संबंधों के विशेषज्ञों से विचार विमर्श किया गया जिससे अनेक रोचक तथ्य निकल कर सामने आये और अनेक साहित्यों के अध्ययन के बाद शोधार्थी की परिकल्पना को दृढता प्राप्त हुई। शोधार्थी यह जिज्ञासा परिकल्पना के रूप में वैज्ञानिक तथ्यों के अवलोकन के बाद प्रस्तुत की जा रही है। यह शोधार्थी की समस्या से उत्पन्न एक विचार है, जिसकी सफलता बोर्ड ऑफ स्ट्डीज के निर्णय पर निर्भर रहेगी।

(7) शोध पद्धतिः

शोधार्थी द्वारा गुणात्मक एवं मात्रात्मक शोध प्रवर्धिका विशद् अवलोकन किया गया है जिसमें शोधार्थी ने भारत जापान के सांस्कृतिक मूल तत्वों की तुलनात्मक अध्ययन को शोध प्रवर्धी मात्रात्मक शोध को प्रयुक्त करने का विचार बनाया है, क्योंकि सांस्कृतिक तत्वों की विशद्ता को गुणात्मक शोध पद्धति से समझने में अनेक कठिनाईयॉ हो सकती हैं, जिसमें सबसे महत्वपूर्ण समस्या शोध क्षेत्र की व्यापकता है। इस कारण शोधार्थी अपने शोध कार्य में मत्रात्मक शोध पद्धति का सहारा लेगा,जिसमें शोध तकनीकी द्वारा संग्रह, साक्षात्कार, प्रश्नावली, शोध क्षेत्र का भ्रमण, सैम्पल तकनीकी का उपयोग कर भारत जापान के सांस्कृतिक तथ्यों को ऐतिहासिक संदर्भ में समझने का प्रयास करेगा। इसके अतिरिक्त शोधार्थी शोध क्षेत्र की व्यापकता के कारण द्वितीयक स्रोत संदर्भ ग्रंथों पर भी व्यापक रूप से निर्भर रहेगा, ताकि मात्रात्मक शोध को एक नवीन स्वरूप प्रदान कर प्रस्तुत करने में कठिनाई न हो।

(8) शोध की रूप रेखाः

अध्याय 1 भारत जापान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एक परिचयः

प्रथम अध्याय में उपरोक्त विषय में भारत जापान के विषय में जैसे भारत और जापान में समता व असमानता के विषय में अवगत कराना रहेगा। मेरा यह प्रयास रहेगा कि मैं उन क्षेत्रों के बारे में अध्ययन कर सकूं, जिसके माध्यम से भारत जापान की परम्पराओं को अपने विषय में बताने का प्रयास कर सकूं, जिससे यह ज्ञात हो सके कि भारत व जापान का संबंध में प्राचीन युग से रहा है।

अध्याय 2 शोध सामाग्री का परिचयः

द्वितीय अध्याय में शोधकर्ता द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीय श्रोतों का अध्ययन किया जायेगा। प्राथमिक श्रोतों में अभिलेखीय सामाग्री तथा गजट नोटिफिकेशन, भारत जापान के आंतरिक सम्बधों में किये गये एम0ओ0यू0 तथा अन्य सभी प्रकार की सामाग्री जो जापान तथा भारतीय अभिलेखागारों से प्राप्त होंगे, का अध्ययन किया जायेगा। इसके साथ ही समाचार पत्रों का भी प्राथमिक श्रोत के रूप में प्रयोग किया जायेगा।

अध्याय 3 शोध क्षेत्र की भौगोलिक स्थितिः

शोध कार्य के तृतीय अध्याय में भारत व जापान की भौगोलिक स्थिति का अध्ययन किया जायेगा जिस हेतु यह जानने का प्रयास किया जायेगा कि भारत व जापान की भौगोलिक स्थिति किस तरह कुछ रूप में सामान्य व कुछ रूप में असामान्य है।

अध्याय 4 भारत जापान के सांस्कृति इतिहास का परिचयः

शोध कार्य के चतुर्थ अध्याय में संबंधित विषय में भारत जापान में बौद्ध धर्म व सामाजिक स्थिति, जिसमें दोनों देशों की वर्ण व्यवस्था व धर्म की प्रधानता पर प्रकाश डाला जायेगा। साथ ही साथ भारत जापान के युद्ध पद्धतियों का भी अध्ययन किया जायेगा कि कैसे दोनों देश एक दूसरे के नजदीकियों को प्राप्त कर सके।

अध्याय 5 आजादी के बाद से वर्तमान तक भारत जापान की राजनैतिक एवं आर्थिक तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन करना :

शोध कार्य के पंचम अध्याय में आजादी के बाद से वर्तमान तक भारत जापान के राजनैतिक एवं आर्थिक तत्वों के बदलते स्वरूप का तुलनात्मक अध्ययन किया जायेगा। वर्तमान सरकार के गठन के बाद भारत जापान संबंधों में वर्तमान प्रधानमंत्री द्वारा लुक ईस्ट एक्ट ईस्ट की पॉलीसी के संदर्भ में भारत व जापान की भूमिका विश्व पटल पर स्थिति व दोनों देशों की घनिष्ट मित्रता, आदान प्रदान तकनीकी, रक्षा सहयोग के बारे में मूल्यांकन किया जायेगा।

अध्याय 6

उपसंहारः

शोध कार्य के षष्ठम अध्याय में उपसंहार के अर्तगत सम्पूर्ण शोध कार्य को संक्षिप्त रूप में वर्णन किया जायेगा।

(9) संदर्भ ग्रंथ सूचीः

शोध कार्य के अन्त में संदर्भ ग्रंथ सूची के तहत आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, पत्र–पत्रिकाओं की सूची, जरनल, पुस्तकालय, मौखिक स्रोत, सरकारी अभिलेख, सूचनायें आदि की सूची दी जायेगी, जिनकी सहायता के आधार पर शोध कार्य सम्पन्न किया जायेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. हैलिना रैरिक–बौद्ध दर्शन के मूल आधार–1996
2. डी0के0हरि एवं डी0के0 हेमा हरि–इंडो जापान सहस्ताब्धियों से एक संबंध–2017
3. शमशेद अहमद खान–चैंजिंग डाइनामिक रिलेशन ऑफ इंडिया जापान
4. सुरेश के शर्मा एवं उषा शर्मा–कल्चरल एण्ड रिलिजियस हैरिटेज ऑफ इंडिया–2004
5. ज्यूयान जांग–रिवाईवल ऑफ बुद्धिज्म–2012
6. रिसिका चौहान–मोदी एण्ड बुद्धिज्म–2015
7. दया किशन थुस्सु–द हिस्टौरिकल कॉटेक्ट ऑफ इंडिया सॉफ्ट पावर
8. मधु पूर्णिमा किशवार–मोदी विजिट सिग्नल्स हिस्टौरिक शिफ्ट इन इंडो इजराइल रिलेशनस–2017
9. शान्तनु किशवार–द राइजिंग रोल ऑफ बुद्धिज्म इन इंडिया शॉफ्ट पावर स्ट्रेटेजी–2018
10. एल प्रसाद–प्राचीन एवं मध्यकालीन भारत

11. के एल खुराना एवं आर सी शर्मा–बीसवीं शताब्दी का विश्व–2005

12. ई डी ए एल बाशाम–कल्चरल हिस्ट्री ऑफ इंडिया।

13. हिरोको इकेदिया एवं हैलसिंकी–अ–टाइप एण्ड मोटिप ऑफ जैपनीज फोक लिटरेचर

14. दुर्गा भागवत–एन आउट लाइन ऑफ इंडियन फोकलौर

15. रिचर्ड एम दौरसन एवं चार्ल्स ई टूटल–फोक लेजेण्डस फरोम जापान

16. नारायण पण्डित एवं रामेश्वर भटट्–हितोप देश

17. महाकवि सोम देव भटट्, प0 केदानाथ शर्मा–कथा सरित सागर वोल्यूम 1, 2, 3

18. बूक्यो बुंगाकू नो सिकाई–द वर्ल्ड ऑफ बुद्धिष्ठ लिटरेचर

19. सरला झिंगरानम, मोती लाल बनारसीदास–इथिकल रिलेटीविज्म एण्ड यूनिवर्सलिज्म

20. डेविड जॉन लू–सोर्स ऑफ जैपनीज हिस्ट्री वोल्यूम 1 एण्ड 2

21. आर एच वान गूलिक, आदित्य–सिद्धा : एन ऐसे ऑन द हिस्ट्री ऑफ संस्कृति स्टडीज इन चाइना एण्ड जापान

22. सिवली व डोनाल्ट एच–मॉर्डनाइजेशन इन जापनीज कल्चर

23. कीनी डोनाल्ट, हॉल्ट राइनहार्ट–डॉन ऑफ द वैस्ट – जैपनीज लिटरेचर इन मॉर्डन एरा

24. इंडो जापान फाउंडेशन संस्था, नई दिल्ली

25. जैपनीज टाईम्स पत्रिका

26. चाइना डेली

27. इंटरनेशनल हैराल्ड ट्रीब्यून

28. एशियन ऐज

29. इंस्टीट्यूट फॉर डिफेंस स्टडीज एण्ड एनालाइज

30. जगनाथ पी पाण्डा, तितली बासु–चाइना इंडिया जापान इन द इंडो पैसेपिक : आइडियाज, इंटरैस्ट एण्ड इफ्रास्ट्रक्चर

31. गुरूमीत कनवाल, नेहा कोहली–डिफेंस रिफार्म : अ नेशनल इम्पैरिटिव